ओ३म्

# नक्कटा चोर और मूर्ख गुरु-चेले

(सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित लघु कथाएँ)

ओ३म्

# विद्यार्थियों के आठ गुण

पुरुषार्थ (मेहनत)

बुद्धिवर्धक पदार्थों का सेवन करना

बुद्धिमत्ता (विवेक)

लोभ, लालच न करना

सुखी, सफल विद्यार्थी

स्थिरता-दृढता

घमंड न करना,
सरल रहना

प्रगतिशील रहना

समय बर्बाद न करना

**निरंतर सफलता और उन्नति को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को ये अनमोल गुण ग्रहण करने चाहिए।**

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

# जन्मपत्र या शोकपत्र

संशोधन
रामनिवास 'गुणग्राहक'

परिवार में जब सन्तान का जन्म होता है, तब घर में चारों ओर आनन्द का वातावरण होता है। पर यह आनन्द उस समय तक ही रहता है जब तक सन्तान के माता-पिता पुरोहित द्वारा अच्छे या बुरे ग्रहों का प्रभाव जन्मपत्री 'कुण्डली' बनवा कर ना जान लें। जब माता-पिता पुरोहित से कहते हैं—

* अगर जन्म पत्र बनवाने वाला धनी हो तो बहुत सी लाल-पीली रेखाओं द्वारा जन्मपत्र 'कुण्डली' को तैयार किया जाता है। और निर्धन हो तो साधारण रीति से तैयार कर सुना दिया जाता है।

ज्योतिषी द्वारा अपने पुत्र के बारे में अच्छी- अच्छी बातें सुनने पर पिता बोला–

वाह-वाह ज्योतिषी जी! आप बहुत अच्छे हो, मेरे पुत्र के बारे में सारी बातें अच्छी बताई।

ज्योतिषी समझता है केवल वाह-वाही से तो मेरा पेट नहीं भरेगा, तब वह बोला–

आपके पुत्र के यह ग्रह तो बहुत अच्छे हैं, परन्तु दूसरे ग्रह क्रूर हैं अर्थात् उन ग्रहों के प्रभाव से आठवें वर्ष में इसका मृत्यु योग बनता है।

ज्योतिषी की यह बात सुन कर माता-पिता पुत्र के जन्म का आनन्द छोड़ कर शोक सागर में डूब जाते हैं...

जन्म और विवाह के समय ग्रह नक्षत्र देखकर जन्म–पत्री या भाग्यफल देखना कोरा पाखण्ड है। ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था को कोई नहीं जानता। ध्यान रहे, अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे का बुरा ही होता है।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

# वैष्णव भक्त 'परिकाल'

संशोधन-
आचार्य हरिप्रसाद

किसी समय में 'परिकाल' नामक एक वैष्णव भक्त था। वह चोरी, डाका मार छल कपट कर, पराया धन हर, वैष्णवों के मन्दिरों में दान दे दिया करता था। उससे उसे बड़ी प्रसन्नता मिलती थी। वैष्णव भी उसकी वाह-वाह किया करते थे।

एक बार कोई साहूकार 'व्यापारी' परिकाल को अपना नौकर बना कर व्यापार करने हेतु जहाज में बैठाकर विदेश में ले गया। वहाँ से व्यापारी ने सुपारी खरीद कर जहाज में भर ली। तब परिकाल ने एक सुपारी को तोड़ा और उसका आधा टुकड़ा व्यापारी को देते हुए कहा –

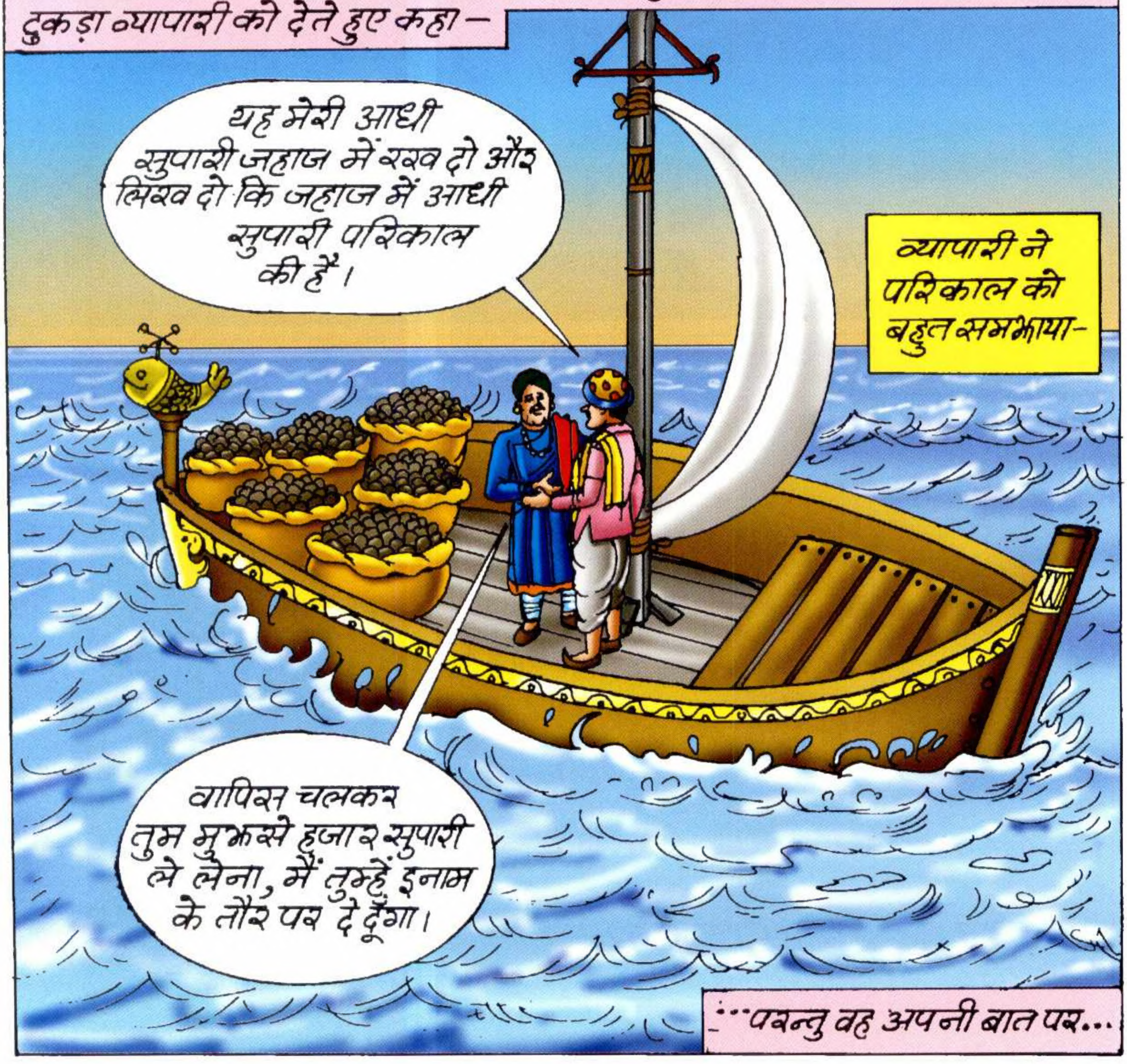

...यह कहते हुए डटा रहा कि –
नहीं! हम अधर्मी नहीं हैं, जो मुफ्त में लें। हमको तो अपनी आधी चाहिये।
व्यापारी भोला था, उसने लिख दिया 'आधी सुपारी परिकाल की है।'
जब जहाज अपने देश में बन्दरगाह पर आया और सुपारी उतारने की तैयारी हुई, तब परिकाल ने व्यापारी से कहा—
हमारी आधी सुपारी दे दो।
लो।
व्यापारी वही आधी सुपारी परिकाल को देने लगा।

छल–कपट, धोखे और ठगी से प्राप्त धन को दान करने से कोई पुण्य नहीं मिलता। पाप का धन धर्मकर्मों की पवित्रता को नष्ट कर देता है।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

# धूर्त-चोर नाककटा

एक चोर जब चोरी करते पकड़ा गया, तब न्यायाधीश ने उसकी नाक काटने का दण्ड सुनाया। जब उसकी नाक काटी गई, तब वह धूर्त चोर नाचने, गाने और हँसने लगा—

हमलोगों को नारायण के दर्शन क्यों नहीं होते ?
?
नाक की आड़ होने की वजह से नारायण नहीं दिखते। अगर तुम अपनी नाक कटवा डालो तो तुम्हें भी नारायण के दर्शन अवश्य होंगे।

उसमें से किसी मूर्ख ने सोचा कि नाक जाय तो भले जाय, परन्तु चतुर्भुज नारायण के दर्शन अवश्य करने चाहिए, उसने कहा–
अरे ! मेरी भी नाक काटो, और नारायण के दर्शन कराओ।
अवश्य ! अभी काटता हूँ।

उसने उसकी नाक काट कर कान में कहा–
अब तू भी मेरी तरह नाच, गा और हँस, नहीं तो हम दोनों का उपहास होगा।
दूसरे नाक कटे ने भी सोचा कि–
कटी नाक तो वापिस आने से रही। अब इसी में भलाई है, जैसा यह कह रहा है वैसा ही करूँ।

फिर वह भी पहले नाक कटे की तरह नाचने, कूदने, गाने और हँसने लगा-
अरे! अब तो मुझे भी चतुर्भुज नारायण के दर्शन हो रहे हैं।
इस तरह एक हजार से भी ज्यादा लोगों की नाक काटी गयी। नक-कटों का अच्छा-खासा जमावड़ा हो गया। चारों ओर शोर मच गया, उन लोगों ने अपना एक सम्प्रदाय बना लिया, जिसका नाम रखा 'नारायणदर्शी सम्प्रदाय।'

जब किसी मूर्ख राजा के कान में यह बात पहुँची तो उसने सभी नारायण दर्शियों को अपने राज्य में बुलाया और उनसे पूछा-
तुम्हें क्या दिखता है?
हम सब को साक्षात् चतुर्भुज नारायण दिखते हैं।
हमें नारायण क्यों नहीं दिखवाई देते?
नारायणदर्शी ने जवाब दिया-
महाराज! जब-तक नाक नहीं कटती, तब तक नारायण के दर्शन नहीं होते।
ठीक है हम भी नाक कटवा कर नारायण के दर्शन करेंगे।
फिर भी राजा ने अपने दीवान के बूढ़े बाप से जो 90 वर्ष का था, उससे सलाह ली, उसने राजा को सलाह दी कि—

महाराज! पहले हमें उसकी परीक्षा लेनी चाहिये। फिर उसकी बातों पर विश्वास करना चाहिए।
क्या इतने सारे नारायणदर्शी झूठ बोलते होंगे?
झूठ बोलें या सच, बगैर परीक्षा लिए कैसे कह सकते हैं?
तो फिर हमें इनकी परीक्षा किस प्रकार से करनी चाहिये?

वृद्ध दीवान ने कहा—
महाराज! मैं बूढ़ा हो गया हूँ, सारे दिन घर में बैठा रहता हूँ और अब थोड़े दिन और जीऊँगा। इसलिये सबसे...
बहुत अच्छी बात है। दीवान जी, जैसा आप ठीक समझें।
...पहले मुझे ही परीक्षा ले लेने दें। उसके बाद जैसा आप ठीक समझें वैसा कीजियेगा।
ज्योतिषी जी। दीवान जी के लिए शुभ मुहूर्त देखो कि कब इनकी नाक कटवानी है?

फिर राजा ठीक समय पर सबको साथ लेकर नारायणदर्शियों के पास पहुँचा। राजा को देख सभी नारायणदर्शी नाचने, कूदने और गाने लगे। फिर राजा ने उस सम्प्रदाय के 'संचालक' जिसकी सबसे पहले नाक कटी थी, उसे बुलाया और कहा—

जब शुभ मुहूर्त आया तब एक थाली दीवानजी के नाक के नीचे पकड़ कर रखी गई। फिर संचालक ने तेज धार वाले चाकू से दीवान की नाक काट कर थाली में डाल दी। दीवान की नाक से खून की तेज धार निकली दीवान का मुँह खून से लथ-पथ हो गया। तब उस धूर्त संचालक ने दीवान के कान में मन्त्रोपदेश किया कि—

इतना कह, धूर्त संचालक अलग हो गया।

जब राजा और दीवान बातें कर रहे थे। तब वह धूर्त भागने की तैयारी कर रहा था। पर राजा की आज्ञा से सैनिकों ने उसे घेर लिया। धूर्त भागने में कामयाब ना हो सका, फिर लोगों ने उसे गधे पर बैठा कर जूतों चप्पलों का हार गले में पहना कर उसे मारते हुए पूरे राज्य में घुमाया। फिर लड़कों ने उसे पीट-पीट कर मार डाला।

धर्म और ईश्वर के नाम पर भोली–भाली जनता को मूर्ख बनाने वाले धूर्तों की जाँच–पड़ताल करके उन्हें कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। पाखण्ड फैलाना और स्वार्थ, लालच और भयभीत होकर पाखण्ड का समर्थन करना घोर पाप है।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

# एक गुरू- दो चेले

किसी गाँव में एक गुरु के साथ उसके दो चेले रहा करते थे। दोनों चेले सच्चे मन से अपने गुरु की सेवा किया करते थे। पर थे मूर्ख।

उतने में दूसरे पैर वाला चेला जो बाजार गया था, वापस आ गया और अपने वाले पैर की सेवा करने लगा। उसने देखा पैर सूजा पड़ा है। वह चिल्ला उठा—

गुरुजी! यह मेरे वाले पैर को क्या हुआ?

यह सब इस दुष्ट का किया धरा है।

फिर गुरुजी ने सारी बात उसे विस्तार से बता दी।

दूसरा चेला भी महा मूर्ख था, चुप-चाप कुछ बोले बगैर डंडा उठाकर गुरुजी के...

आह! मर गया।

मड़ मड़

मड़ मड़

...दूसरे पैर पर दे मारा। तो गुरु ने उच्च स्वर में चिल्लाना शुरु किया। यह देख कर पहले वाला भी डंडा लेकर पिल पड़ा और दोनों चेले गुरु के पैरों को पीटने लगे।

कई बार आपसी मनमुटाव और वैर-विरोध के कारण बहुत से लोग अपने परिवार, समाज व राष्ट्र को भारी हानि पहुँचाते हैं। बच्चों ! ध्यान रखो कि जाने-अनजाने में हमसे ऐसी गलतियाँ न हों।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

# अविद्या की मूर्ति खाखी साधु

खाखी साधुओं के पास जो भी जाता है, वह उसे बच्चा या बच्ची कह कर सम्बोधित करते हैं। चाहे आगन्तुक उसके माँ या बाप की उम्र का ही क्यों न हो। जैसे खाखी साधु होते हैं उसी प्रकार के रूंखड़, सूंखड़, गोदाडिये, कानफटे, जोगी, औघड बाबा आदि सभी एक ही जमात के होते हैं।

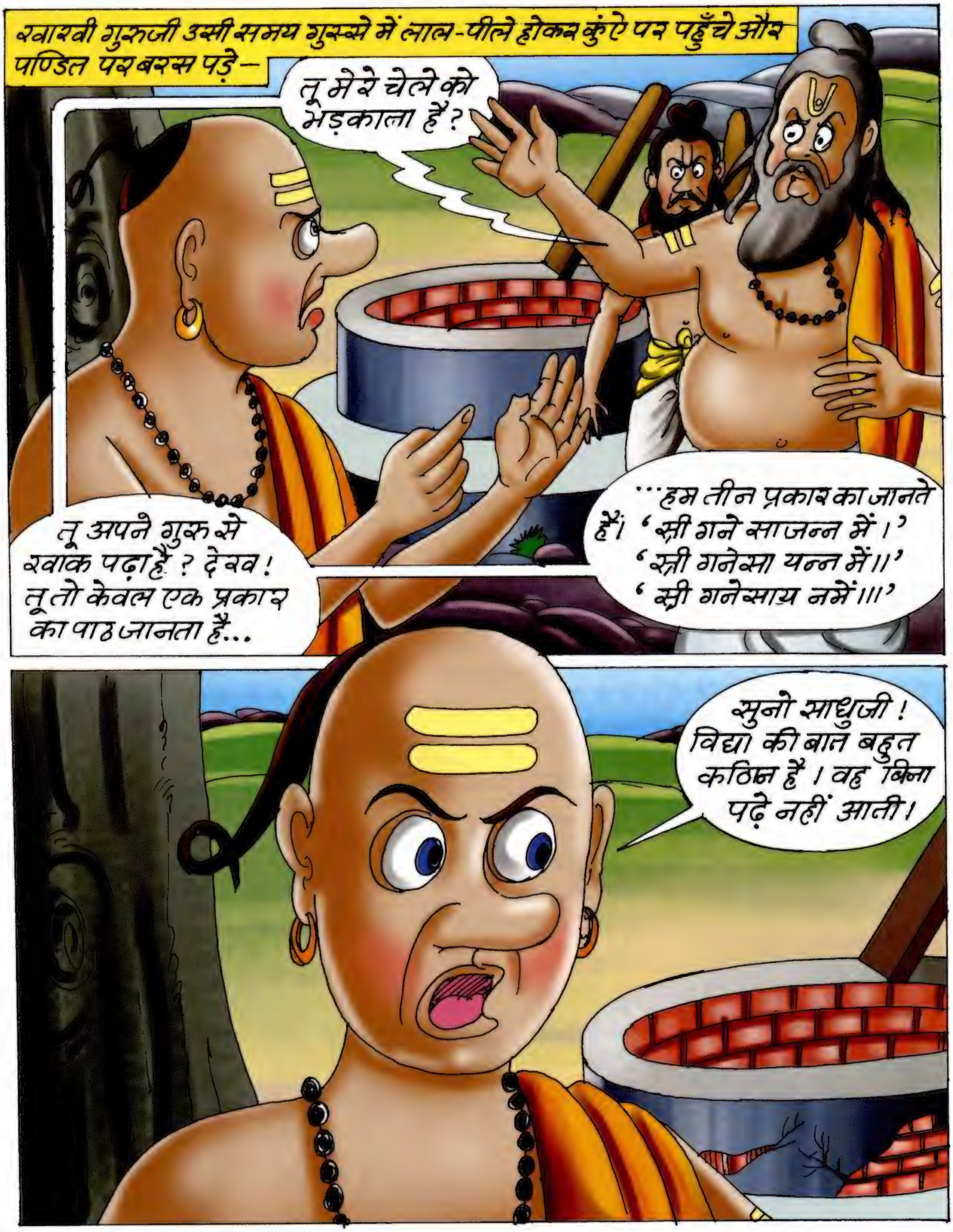
खारवी गुरुजी उसी समय गुस्से में लाल-पीले होकर कुंऐ पर पहुँचे और पण्डित पर बरस पड़े—
तू मेरे चेले को भड़काला है?
तू अपने गुरु से खाक पढ़ा है? देख! तू तो केवल एक प्रकार का पाठ जानता है...
...हम तीन प्रकार का जानते हैं। 'स्त्री गने साजन्न में।' 'स्त्री गनेसा यन्न में।।' 'स्त्री गनेसाय नमें।।।'
सुनो साधुजी! विद्या की बात बहुत कठिन है। वह बिना पढ़े नहीं आती।

पण्डित से इतनी बात सुनते ही रवारवी साधु आग बबूला हो गया और उसके मन में जो आया वह बकने लगा।

चल बे! बड़े-बड़े विद्वानों को हम भांग में घोट कर पी गये। तेरी हमारे सामने क्या औकात है?

देखो! जो तुमने विद्या पढ़ी होती तो ऐसे अपशब्द ना बोलते? तुम हर प्रकार से अज्ञानी हो...

...जिसके भाग्य नष्ट होते हैं। उनकी तुम्हारी जैसी बुद्धि और अभिमान होता है।

बहुत देर तक नोंक झोंक करने के बाद पण्डित अपने घर चला गया और रवारवी गुरु अपने आश्रम में। जब सन्ध्या हुई तब रवारवी साधु को बुड्ढा समझ दूसरे रवारवी वहाँ साष्टांग प्रणाम करने आये। तब रवारवी गुरु ने उनसे पूछा–

अबे राम दासिया! तू क्या पढ़ा है?

महाराज मैंने 'वैस्नुसहस्रनाम' पढ़ा है।...

...परन्तु, महाराज! आप क्या पढ़े हैं?

बच्चों ! बिना पढ़े–लिखे शुद्ध भाषा न बोल सकने वाले नशेड़ी वैरागी अपना व दूसरों का जीवन बिगाड़ते रहते हैं। वेद पढ़े हुए सदाचारी विद्या और विज्ञान जानने वाले तपस्वी ही सच्चे संन्यासी होते हैं।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

# गोदान
# जाटजी-पोपजी

एक जाट था, उसके पास रोज के बीस सेर दूध देने वाली एक गाय थी। उसका दूध बहुत ही स्वादिष्ट होता था। वहीं उसका पुरोहित भी रहा करता था, जिसे पोपजी कहा करते थे। उसका ध्यान इसी में था, कि जब जाट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा, तब इसी गाय का सङ्कल्प करा कर अपने घर ले जाऊँगा।

जाट ने दस का नोट अपने पिता के हाथ में रखवा और बोला—

पोपजी! पढ़ो सङ्कल्प।

वाह! वाह!! क्या बाप बार-बार मरता है? इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती हो, बुड्ढी ना हो, सब प्रकार से उत्तम हो। ऐसी गौ का दान करना चाहिये।

यह सुन जाट जी बोले—

पोपजी! हमारे पास तो एक ही गाय है, उसके बिना हमारे बाल-बच्चों का गुजारा न चल सकेगा। उसके बदले में यह बीस रुपये का सङ्कल्प पढ़ दें और इन पैसों से वैसी ही उत्तम गाय ले लें।

वाह जी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक महत्व देते हो? क्या अपने बाप को वैतरणी नदी में डुबा कर दुःख देना चाहते हो?

बस फिर क्या था, सारे कुटुम्बी लोग भी पोपजी की ओर हो गये, क्योंकि उन सब को पहले से ही पोपजी ने बहका रक्खा था। सभी ने मिल कर उसी गाय का सङ्कल्प पोपजी से करवा दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। पिता के मरते ही पोपजी गाय को बछड़े सहित अपने घर ले गया। गाय-बछड़े को बाँध कर पोपजी वापिस जाट के घर आया। श्मशान भूमि में जाकर दाह-संस्कार करवाया, फिर पिंड दान कराया, ब्रह्मभोज आदि सब क्रिया हो चुकी तब तेरह दिन बाद चौदहवे दिन जाट पोपजी के घर पहुँच गया। उस समय पोपजी गाय दुह रहा था। जाट को देखकर पोपजी बोला—

अच्छा! तो आपने वैतरणी के किनारे गाय क्यों नहीं पहुँचाई?...
...हम तो आपके भरोसे पर रहे और आप अपने घर पर गाय बाँधे बैठे हैं। न जाने मेरे पिता-जी ने वैतरणी में कितने गोते खाये होंगे?
नहीं- नहीं, वहाँ इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बन कर उसको पार उतार दिया होगा।
वैतरणी नदी यहाँ से बहुत दूर है। वहाँ तुम्हारी चिट्ठी या तार से समाचार पहुँचा हो और उत्तर आया हो कि अमुक 'व्यक्ति के पिता को पार उतार दिया गया' ऐसा कोई प्रमाण आपके पास हो तो दिखलाओ?
हमारे पास गरुड़ पुराण के लेख के सिवाय और कोई प्रमाण नहीं हैं।
इस गरुड़ पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?
जैसे सब मानते हैं।

बच्चो ! सच्चे ब्राह्मण वे ही हैं जो वेद पढ़ते–पढ़ाते, यज्ञ अपने घर करते और दूसरों के घर कराते तथा परोपकार के लिए दान लेते और देते हैं। पाखण्ड और अन्धविश्वास फैलाने वालों से दूर रहना चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना
कौए की बीट या वैष्णव तिलक
दो मित्र हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थों पर चर्चा कर रहे थे। पहला बोला—
हमारे धर्म-ग्रन्थों में बहुत अच्छी और उत्तम बातें लिखी हैं। हमें उनका पालन करना चाहिए।
चार वेद हमारी वैदिक संस्कृति के मूल आधार हैं। उसकी सम्पूर्ण शिक्षा कल्याण कारी है। उसके बाद के पुराण आदि ग्रन्थों में उल्टी-सीधी मिलावटें कर रखी हैं।
यह बात नहीं है। हमारे विद्वानों ने जो कुछ भी लिखा है वह बुद्धि और तर्क के अनुकूल है।
ऐसी बात होती तो हमारा सामाजिक और धार्मिक पतन नहीं होता। ऐसी ही एक कथा भक्तमाल नामक ग्रन्थ में आती है। जिसका बुद्धि और तर्क से कोई सम्बन्ध नहीं। ऐसी पुस्तकों को पढ़कर हमारे भोले-भाले भक्तगण ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था को नहीं समझ पाते और तरह-तरह की कल्पनाएँ करते रहते हैं

बच्चो! तिलक छापे लगाने, भस्म रमाने और बाल बढ़ाने से कोई स्वर्ग (सुख विशेष) नहीं पा सकता। स्वर्ग (सुख) और नर्क (दुःख) तो हमारे अच्छे–बुरे कर्मों से ही मिलता है।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

# भूत-प्रेत झाड़-फूंक

माता-पिता अपने बालकों का सदा उत्तम शिक्षा तथा उत्तम संस्कारों द्वारा पालन-पोषण करें। जिससे वह भविष्य में भूत-प्रेत- झाड़-फूंक आदि बातों पर विश्वास न करें तथा दूसरों को भी इन अंध विश्वासों से सचेत कर सकें।

बच्चो ! भूत–प्रेत, चुडैल–डायन आदि सब पाखण्डियों की ठग विद्या है। रोगी को योग्य डॉक्टर–वैद्यों के पास ले जाना चाहिए। गण्डे–ताबीज, टोने–टोटके सब अनपढ़ व बुद्धिहीन लोगों को लूटने के साधन हैं।

ओ३म्

# विद्यार्थियों के आठ अवगुण

आलस्य

नशा करना

मूर्खता

लोभ-लालच करना

दुःखी असफल विद्यार्थी

चंचलता

अभिमान 'घमंड करना'

जड़ता

कभी पढ़ना कभी न पढ़ना

व्यर्थ इधर-उधर की बातें करना

**जीवन में सफलता और उन्नति पाने के लिए विद्यार्थी अपने ये दोष दूर करें।**

# हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स

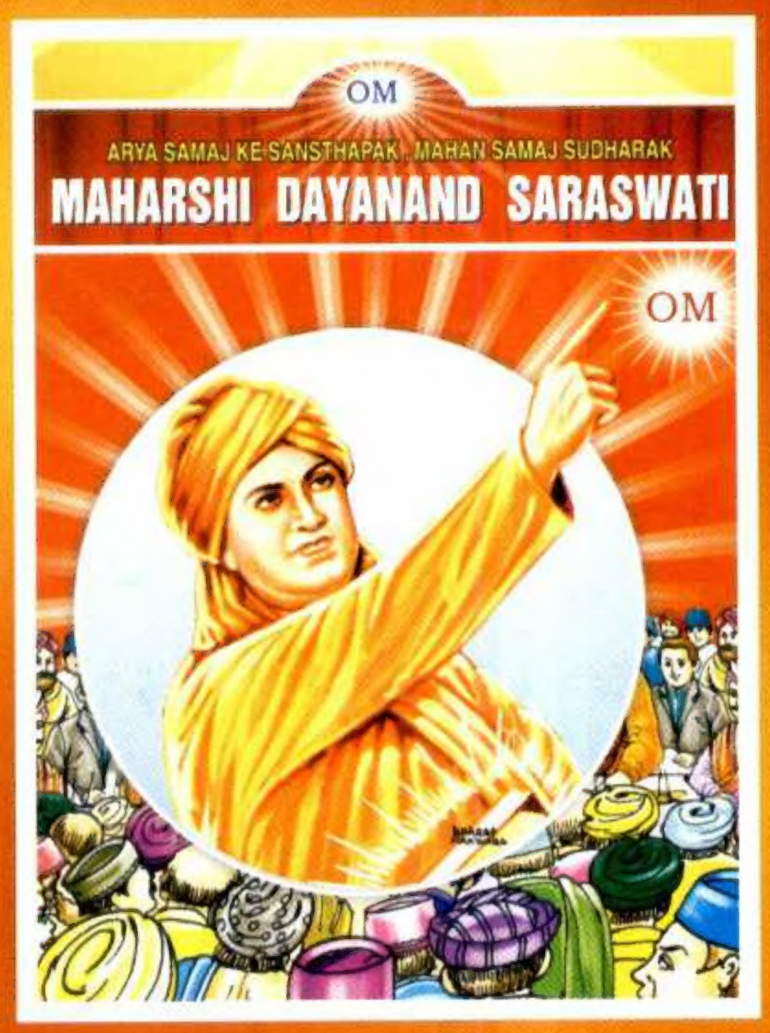


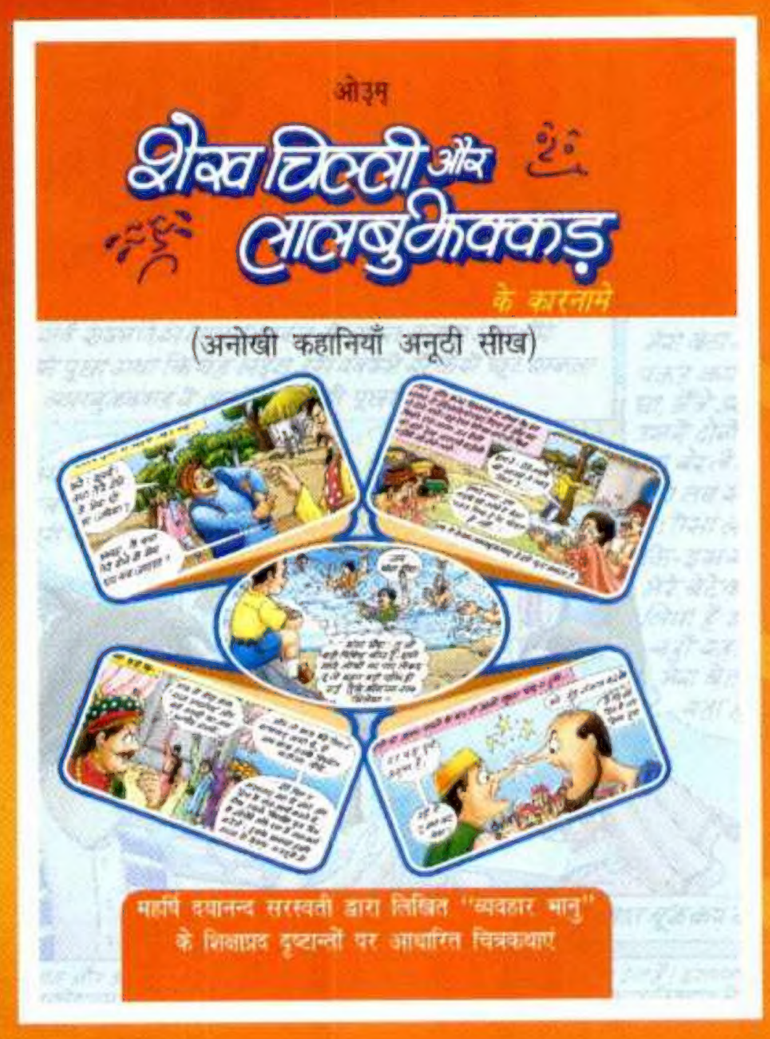


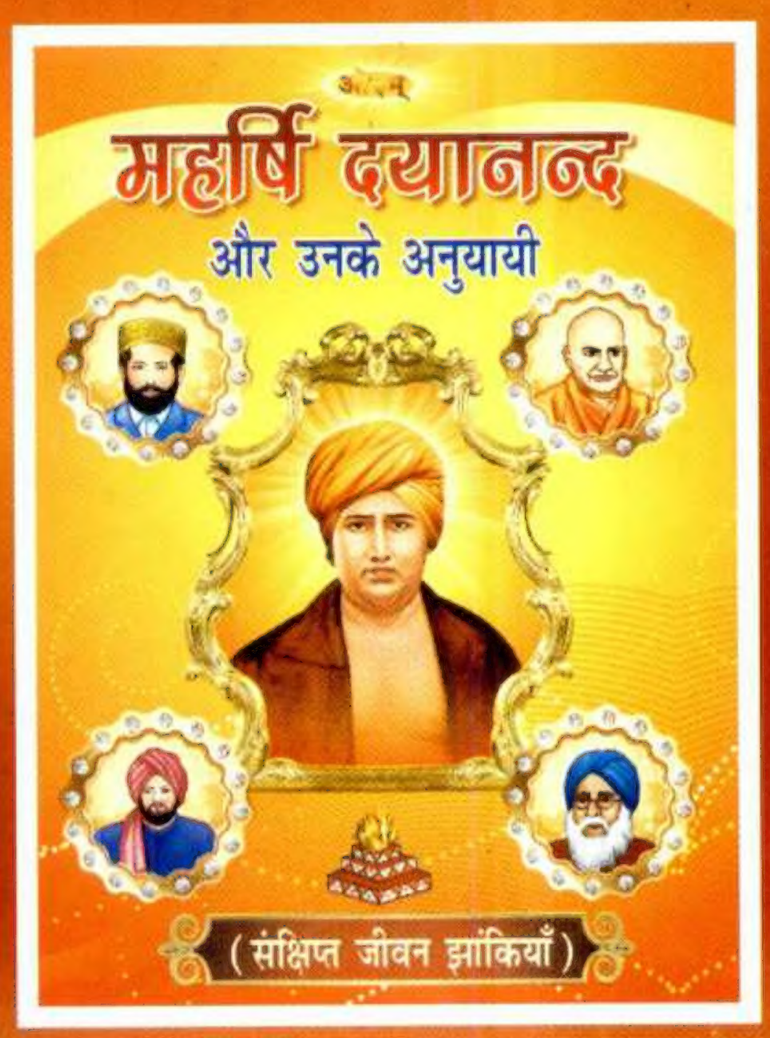


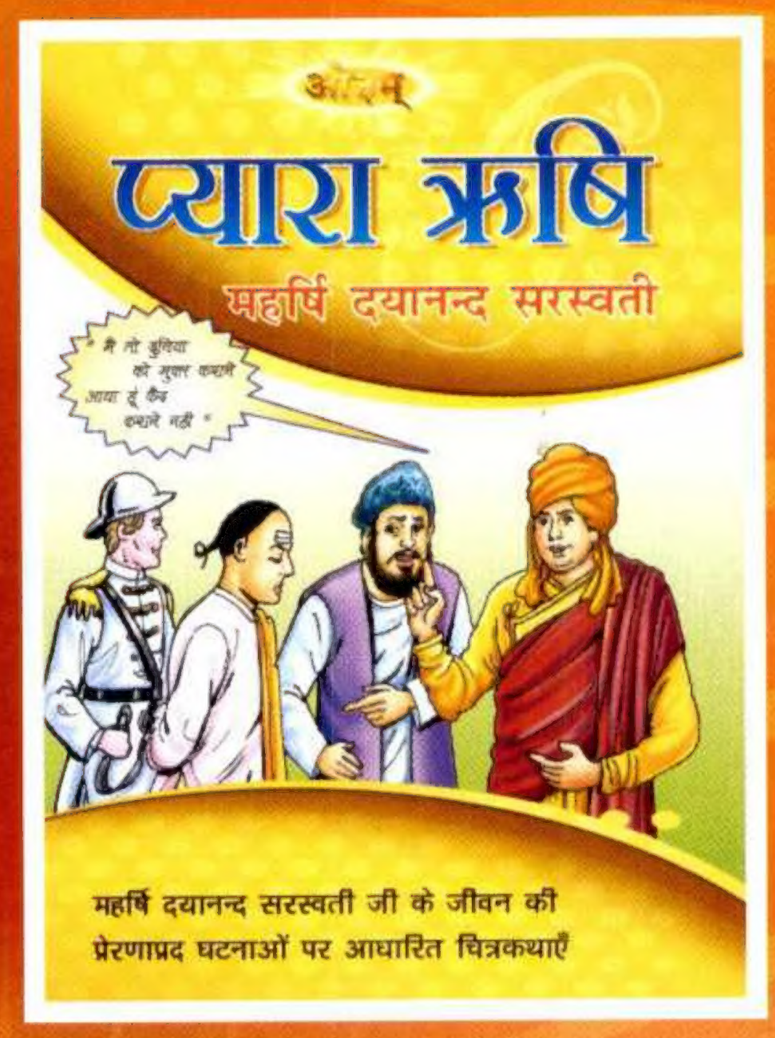

**प्रकाशक-वितरक**

## आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006
फोन-011-43781191

**प्राप्ति स्थान**

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 फोन न. 011-23360150]23365959
email:aryasabha@yahoo.com website:delhisabha.com

प्रचारार्थ मूल्य : 30/- मात्र